NEWS COVERAGE

बस्तर भास्कर 04-08-2020

कृषि वैज्ञानिकों ने महिलाओं को सिखाया जैविक खाद बनाना

कृषि विज्ञान केंद्र में महिलाओं को प्रशिक्षण देते केवीके के वैज्ञानिक।

जगदलपुर| जिले में संचालित गोठानों में काम करने वाले स्वसहायता समूहों की महिलाओं को जैविक खाद बनाने के लिए कृषि वैज्ञानिक प्रशिक्षण दे रहे हैं। कुम्हरावंड स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में सोमवार को केवीके के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. संतोष नाग ने महिलाओं को बताया कि जैविक खाद बनाने का फायदा सबसे अधिक किसानों को मिलेगा। वहीं उनकी आमदनी में बढ़ोतरी होगी। कम समय में बेहतर खाद बनाने के लिए गोबर का संधारण सही ढंग से होना चाहिए। इसके लिए हर गोठान में टांके बनाए गए हैं, जहां गोबर को सुरक्षित रखा जा रहा है।

डॉ. नाग ने बताया गोबर में केंचुआ छोड़ने से खाद बनने में लंबा समय नहीं लगता है। उत्तरी भारत में आइसीनिया प्रजाति का केंचुआ खाद बनाने के लिए उपयुक्त होता है, जो अधिकतम तीन महीने में जैविक अपशिष्ठ को केंचुआ खाद के रूप में अपघटित कर देता है। केंद्र के वैज्ञानिक धर्मपाल केरकेट्टा ने बताया केंचुआ खाद, में अन्य सभी जैविक कम्पोस्ट की तुलना में सर्वाधिक पोषक तत्व होता है जो मिट्टी में सुधार के साथ पौधों के लिए बहुत ही लाभकारी होता है।

20 महिला समूह ले चुके हैं प्रशिक्षण : जिले में 273 गोठानों का निर्माण होना है। अभी तक करीब 100 गोठान बन चुके हैं, जिसमें खाद बनाना शुरू कर दिया गया है। इस काम में महिलाओं को परेशानी न हो इसलिए केवीके के वैज्ञानिकों ने अब तक 20 गोठानों के स्वसहायता समूह की महिलाओं को प्रशिक्षण दे चुके हैं। नाग ने कहा कि आने वाले दिनों में ब्लाक व जिला स्तर पर भी समूहों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसके लिए केवीके की टीम बना ली गई है, जिन्हें समय- समय पर भेजा जा रहा है।

केवीके का प्रयास: धान में कीटों एवं बीमारियों से बचाव के लिए दी गई जानकारियां

बस्तरिया किसान अब खेत में रंग- बिरंगी शिमला मिर्च उपजाएंगे

बायोटेक किसान हब योजना के चलते प्रक्षेत्रों में विभिन्न किस्मों का किया प्रदर्शन

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

जगदलपुर . पूरे बस्तर में धान की रोपाई कार्य लगभग समाप्त हो चुका है। फसल के अच्छे उत्पादन के लिए सिंचाई एवं उर्वरक के साथ साथ कीटों एवं रोगों के उचित प्रबंधन की आवश्यकता होती है।

इस वर्ष कृषि विज्ञान केंद्र, बस्तर द्वारा बायोटेक किसान हब योजनांतर्गत धान के विभिन्न किस्मो का प्रदर्शन कार्यक्रम कृषक प्रक्षेत्रों पर लिया गया है। कृषि विज्ञान केंद बस्तर के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ संतोष नाग ने बताया कि केवीके बायोटेक किसान हब योजना के अंतर्गत आगामी वर्षों तक कार्य करने वाला जिसमें फोर्टिफाइड राइस की खेती के साथ कृषि संबद्ध कई गतिविधियां जैसे बकरी पालन, विभिन्न रंगों के शिमला मिर्च की खेती इत्यादि सम्मिलित हैं। वर्तमान में योजनांतर्गत फोर्टिफाइड धान का प्रदर्शन वृहत पैमाने पर लगाया गया है। फोर्टिफइड राइस कहने का तात्पर्य धान के उन किसमों से है जिनको विकसित करते समयए कई आवश्यक पोषक तत्व उनमें मिलाये जाते हैं जो आगे चलकर कुपोषण निवारण में कारगर साबित हो सकते हैं। इसी प्रकार के धान के किस्म जिंक राइस का प्रदर्शन कार्यक्रम केवीके द्वारा लिया गया है। जिनमें कीट एवं बीमारी के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है।

केंद्र के कीट वैज्ञानिक धर्मपाल केरकेट्टा ने बताया कि चूंकि अभी तक इस वर्ष वर्षा आवश्यकता से कम हुई है जिससे धान की फसल की बढ़वार भी ठीक से नहीं हो पा रही है। इस परिस्थिति में कीटों का प्रकोप फसलों में काफी हानी पहुँच सकता है। धान की फसल में तना छेदकए एवं गंगई प्रमुख कीट हैं जो दोनों ही पौधे के मुख्य प्ररोह क्षेत्र में आक्रमण कर पूर्ण क्षति पहुँचाते हैं और यदि समय रहते कीट प्रबंधन नहीं किया जाए तो आगे बलियाँ भी नहीं बनती है। इन कीटों की रोकथाम के लिए कृषक प्रोफेनोफोस 750 मीली है या कार्बोसल्फान 1000 मीली या थायोमेथोक्साम 100 ग्राम में से किसी एक दवा छिड़काव कर सकते हैं। पौध रोग विशेषज्ञ रीतिका समरथ ने बताया की प्रमुख बीमारी जैसे फफूंद झुलसा के लिए ट्राइसाइक्लाजोल 120 ग्राम एकड़ एवं जीवाणु झुलसा हेतु स्ट्रेप्टोमाइसीन या कॉपर आक्सीक्लोराइड के घोल का छिड़काव खड़ी फसलों पर करना चाहिए। अन्य संबन्धित समस्याओं के लिए कृषक कृषि विज्ञान केंद्र कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

प्रशिक्षण... किसानों को फसल उगाने के साथ ही कीट प्रकोप से बचने का दिया जा रहा प्रशिक्षण।

बस्तर भास्कर 07-08-2020

दैनिक भास्कर | जगदलपुर | रायपुर, शुक्रवार 07 अगस्त, 2020 | 12

कृषि वैज्ञानिकों ने संक्रमण से बचाव के लिए की पहल

कोरोना काल में इम्युनिटी बढ़ाने वाले गिलोय, एलोवेरा और लेमनग्रास के पौधे सिर्फ ₹20 में मिलेंगे, घर में लगाइए व बढ़ाइए रोग प्रतिरोधक क्षमता

भास्कर खास

भास्कर न्यूज़|जगदलपुर

कोरोना काल में लोगों के साथ ही किसानों को संक्रमण से बचाने कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक जुटे हैं। जिले में वैज्ञानिकों के द्वारा लोगों को राहत देने पहली बार गिलोय, एलोवेरा ओर लेमनग्रास के साथ ही अन्य पौधे दिए जाएंगे। 4 से अधिक प्रजाति के तैयार इन पौधों को बाजार से कम दाम पर केवल 20 रुपए में मिलेगा।

वैज्ञानिकों ने अब तक नीम, एलोवेरा और गिलोय के पौधे तैयार कर लिए हैं। इसके अलावा लेमनग्रास और अन्य आयुर्वेदिक पौधे तैयार किए जा रहे हैं। लोग बारिश के बीच इन पौधों को लगा सकें इसलिए पहले चरण में 500 लोगों को 31 अगस्त तक पौधों को बेचा जाएगा।

केंद्र के वैज्ञानिक एसके नाग ने बताया कि आयुर्वेदिक पौधों को लगाने लोगों की बढ़ रही रूचि को देखते हुए यह योजना करीब तीन महीने पहले बनाई थी जिसे अब पूरा कर लिया गया है। आने वाले दिनों में इन पौधों को केंद्र में आने वाले लोगों को बेच दिया जाएगा।

कृषि वैज्ञानिकों ने केंद्र की नर्सरी में तैयार किया आयुर्वेदिक पौधा।

पहले चरण में 10 गांव शामिल, हर गांव के 20 किसान

केवीके से संचालित योजना के पहले चरण में तीन ब्लाक के 10 गांवों को शामिल किया है। इन ब्लॉकों में तोकापाल, जगदलपुर और लोहांडीगुड़ा शामिल हैं। जगदलपुर ब्लाक के तितिरगांव, बालीकोंटा, कुम्हरावंड और बिरिंगपाल गांव शामिल हैं। जबकि तोकापाल का देऊरगांव, छापरभानपुरी, कोंडालूर और घाट धनोरा शामिल है। लोहांडीगुड़ा ब्लॉक के बाघनपाल और एरंडवाल शामिल हैं। इन सभी गांव के 20-20 किसानों का चयन इस योजना के लिए किया गया है।

किसानों को इस तरह के सब्जी-फल बीज दिए जाएंगे

कृषि विज्ञान केंद्र जिमी कांदा, भिंडी, लौकी, बरबट्टी, भटा, टमाटर, मिर्ची, कुंदरू कलम, करेला, मेथी, पालक, कद्दू, मुनगा, नींबू, पपीता, केला, कटहल, आम, अमरूद, एलोवेरा, लेमनग्रास, गिलोय और नीम आदि के बीज व पौधे निशुल्क देने वर्ष भर का प्लान तैयार कर बांटा जाएगा। प्रत्येक बाड़ी के लिए वर्ष भर के लिए एक हजार रुपए निर्धारित किया गया है।

वैज्ञानिक 200 किसानों की बाड़ियों को करेंगे डेवलप

किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए संचालित नरवा, गरूवा और धुरवा के अंतर्गत बाड़ी योजना बनाई गई है। इस योजना को सफल करने कृषि वैज्ञानिक जुटे हुए हैं। योजना में शामिल केंद्र के वैज्ञानिक पहले साल 200 किसानों की बाड़ियों को डेवलप करेंगे। वैज्ञानिक एक किसान की बाड़ी में लगाए जाने वाले पौधों व बीज के लिए एक साल में एक हजार रुपए खर्च करेगा इसके लिए वैज्ञानिकों ने साल भर की योजना तैयार कर ली है। वैज्ञानिक सुशील कश्यप ने बताया कि इस योजना के तहत साल भर मौसमवार सब्जी, फल के लिए चिन्हित किसानों की बाड़ी के लिये सब्जियों के बीज व फलदार पौधे दिए जाते रहेंगे ताकि अलग अलग मौसम में बाड़ी में प्रचुर मात्रा में पोषक सब्जी व फल का उत्पादन होता रहे इससे किसान व ग्रामीण को साल भर घर की ताजी सब्जी मिलेगी और बाजार में बेचकर अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर सकेंगे।

दैनिक भास्कर बस्तर भास्कर 08-08-2020

रायपुर, रविवार 08 अगस्त, 2020 | 12

अंचल की खबरें

बिरिंगपाल गोठान में महिला समूहों को वैज्ञानिकों ने दिया वर्मी कम्पोस्ट बनाने का प्रशिक्षण

जगदलपुर| कृषि वैज्ञानिकों ने गुरुवार को बिरिंगपाल गोठान में काम कर रहीं स्वसहायता समूहों की महिलाओं को जैविक खाद बनाने का प्रशिक्षण दिया। कृषि महाविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. तेजपाल चन्द्राकर व स्वाति ठाकुर ने महिलाओं को वर्मी कम्पोस्ट निर्माण के बारे में बताया प्रशिक्षण में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक सुशील कश्यप, कृषि विभाग के वरिष्ठ कृषि विस्तार अधिकारी आरके मिश्रा, रुकमणी कट्टम, ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी चंद्रपाल सिंह, सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी रोबर्टसन मौजूद थे। हर ब्लॉक में अधिकारियों को गोठान को गोद लेने का निर्देश जारी किया गया है। अपर कलेक्टर अरविंद एक्का ने बिरिंगपाल में बनाए गोठान को गोद लिया। अपर कलेक्टर ने यहां पर पौधे लगाए और समूह को खाद का उपयोग करने के तरीके बताए।

मंडी टैक्स के दायरे से मुक्त होंगे किसान

बलराम जयंती पर कृषि विज्ञान केंद्र में जुटे किसान, पीएम की बातें सुनीं

भास्कर न्यूज|जगदलपुर

कृषि विज्ञान केंद्र में रविवार को बलराम जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में जिले के कृषक सम्मान निधि प्राप्त किसान शामिल हुए और आत्मनिर्भर कृषि कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देख इसका लाभ लिया। यह कार्यक्रम पूरे देश के कृषि विज्ञान केंद्रों में एक साथ आयोजित किया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि किसान अब गांवों में उद्योग लगाकर अपने उत्पादों को पूरे देश में बेच सकते हैं। आने वाले दिनों में किसानों को मंडी टैक्स के दायरे से मुक्त रखा जाएगा। किसान आपस में मिलकर किसान उत्पादक संगठन बनाकर खेती को व्यवसायिक रूप देकर लाभ ले सकते हैं।

पीएम ने उन्होंने कहा कि देश की पहली किसान ट्रेन की शुरुआत महाराष्ट्र से गुजरात तक हो चुकी है, जो किसानों के उत्पादों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाएगी। यह एक चलता फिरता कोल्ड स्टोरेज है, जिसमें किसान बिना नुकसान के अपने फलों एवं सब्जियों का अच्छा दाम प्राप्त कर सकेंगे। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारी, कर्मचारी एवं किसान मौजूद थे।

कृषि विज्ञान केंद्र में संचालित गतिविधियों का जायजा लेने जाते किसान।

किसान बोले- व्यावसायिक खेती से ही मिलेगा लाभ

कार्यक्रम में शामिल 39 किसान पीएम की बातें सुनने के बाद कहा कि आने वाले दिनों में व्यावसायिक खेती करेंगे। इसके लिए किसानों का समूह बनाया जाएगा और आधुनिक तरीके से खेती करने वाले वैज्ञानिकों को इसमें शामिल किया जाएगा। केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एसके नाग ने कहा कि किसानों को आत्मनिर्भर बनाने और उनकी आय बढ़ाने के लिए केंद्र के वैज्ञानिक लगातार उनकी मदद कर रहे हैं। किसानों को किस सीजन में कौन सी फसल की खेती कब और कैसे करनी है। इसके बारे में समय-समय पर उन्हें जानकारी दी जाती है।

Senior Scientist &Head
Krishi Vigyan Kendra, Bastar (C.G.)